"कबीर के काव्य में लोक चेतना का स्वरूप : एक अध्ययन"

Kabeer Ke Kavya Men Lokchetna Ka Swaroop: Ek Adhyayan

SHORT SYNOPSIS

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की हिन्दी विषय में
पी-एच०डी० की उपाधि हेतु प्रस्तावित

शोध प्रारूप

Synopsis / Research proposal to U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj for Ph.D. in Hindi

Submitted by

प्रस्तुतकर्ता

Name of the Guide
Prof. Satyapal Tiwari
शोध निर्देशक
प्रो० सत्यपाल तिवारी
School of Humanities
मानविकी विद्या शाखा

अन्तिमा

Name of Candidate- **Antima Vishwakarma**
शोधार्थिनी का नाम- अन्तिमा विश्वकर्मा
Enrollment No.- **2201301**
नामांकन संख्या- 2201301
Subject- **Hindi Literature**
विषय- हिन्दी साहित्य

उ०प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
U.P. RAJARSHI TANDON OPEN UNIVERSITY, PRAYAGRAJ

School of Humanities

CERTIFICATE

I hereby declare that the short synopsis **"कबीर के काव्य में लोक चेतना का स्वरूप : एक अध्ययन"** being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Hindi under school of Humanities of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2023.-24

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof. Satyapal Tiwari and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free report has been submitted.

अन्तिमा

Antima Vishwakarma
En. No. 2201301

Research Supervisor :
Prof. Satyapal Tiwari
(Faculty of Hindi)
Director of School of Humanities

23.7.25

Prof. P.K. Pandey
(Secretary of RDC/Director, R& D Cell)

Abstract:

भक्तिकालीन निर्गुण संत कवि कबीर दास जी संत, कवि, मानवतावादी, समाज सुधारक, कई रूपों में हमारे सामने आते हैं। वास्तव में वे एक श्रेष्ठ मानव थे और मानव होने के नाते ही उन्हें समाज में ब्याप्त कुरीतियों, पाखण्डों एवं वाह्य. आडम्बरो से घृणा थी, उन्होंने अपने सम्पूर्ण युग को अपनी दृष्टि से देखा था और अपने विवेक से ही युग की सभी रूढ़ियों और अंधविश्वासों का पर्दाफाश किया था। अंधविश्वासों, खोखली सामाजिक मान्यताएँ, पाखंडी पंडित, काजी, मुल्ला आदि के खिलाफ आवाज उठाई, हिन्दू मुस्लिम दोनों की तीव्र भर्त्सना किया और सामान्य जीवन जीने के लिए जन सामान्य की प्रगति का रास्ता दिखाया।

कबीर की मान्यता रही है कि यदि ऊँचे कुल में पैदा होने वाला व्यक्ति मानवता विहीन है, उसके गुण और कर्म उच्च नहीं है तो कुल की उच्चता उसे उच्च नहीं बना सकती, शक्तिशाली व्यक्ति किसी गरीब को पीड़ा पहुंचाता है तो वह भी हेय है। कवीर धन, कुल, शारीरिक शक्ति को नहीं बल्कि सद्गुणों और सदाचार को ही महत्व देते है। कबीर की लोकचेतना समाज में व्याप्त अंधविश्वास, कुरीतियों, वाह्याडम्बर, कर्म कांड, टोना टोटका आदि का विरोध कर समाज सुधार करना था वे जनता को अत्यन्त सरल भाषा में समानता एवं प्रेम का संदेश देते हैं। आत्मविश्वास और स्वावलम्बन उनके जीवन का मूल मंत्र था, भटके हुए समाज को सही रास्ते पर लाना उनका उद्देश्य था।

Key Word-मुख्य शब्द, संकेत शब्द–अंधविश्वास, भ्रष्टाचार, कुरीति, रूढ़ि, कर्मकाण्ड, टोना–टोटका, अंधविश्वास, मूर्तिपूजा, छुआ–छूत आदि का विरोध कर लोक चेतना विकसित रहना।

आन्तिमा

CONTENTS

Sr. No.	Description	Page No.
1.	Introduction	5-7
2.	Literature Review	7
3.	Description Broad Area	7
4.	Objectives of the Study	7
5.	Research Methodology	8
6.	Expected outcome of the Research	8
References		9
Plagiarism Report		

आत्मा

Introduction-

लोक शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है—जनता, जगत या संसार। लोक शब्द व्यापक अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है यहां हम जिस लोक शब्द की बात कर रहे है उसका अर्थ है परिनिष्ठ या शिष्ट का विलोम, अशिष्ट अर्थात् असभ्य, गंवार या असंस्कृत। लोक शब्द हिन्दी में साधारण जन के लिए भी प्रयुक्त होता है जिसका विलोम अभिजन या अभिजात वर्गों के लोग हैं अर्थात् साधारण जनता का विशाल भाग, जिसे हम संसार कहते है यही लोक है यानी जो परलोक के उलट है हम जिस समाज में रहते है क्रियाकलाप करते है वही समाज लोकजीवन है और इसी व्यापक लोकजीवन का धर्म लोक धर्म है। यह संसार या समाज जिसमें हम रहते है एक समान नहीं है, इसमें अमीर भी है, गरीब भी है, उच्च वर्गों के लोग भी है और निम्न वर्गों के लोग भी, शिक्षित अशिक्षित सभी इसमें है।

हमारा यह समाज कई वर्गों में बंटा हुआ समाज है जिसमें अधिकांश जनता श्रम करने वाली जनता है और एक छोटा अंश वह है जो सम्पत्तिशाली है, जो बिना श्रम किए दूसरों के श्रम से लाभ कमाता है, उत्पादन के साधनों का स्वामी है, समाज की गतिविधियों, आचार व्यवहारों, कानून कायदों आदि का निर्माता एवं नियंता है। समाज में प्रभुत्वशाली वर्ग की विचार धारा ही समाज की प्रधान विचारधारा होती है समाज में उसी का पालन अनुपालन होता है। हम अपने देश की बात करे तो परम्परा से चले आते हुए सारे धर्मशास्त्र इसी प्रभुत्वशाली वर्ग के रचे हुए है जिन्हें सम्पूर्ण समाज के लिए रचा और सम्पूर्ण समाज उसका पातन करे ऐसी व्यवस्था भी उसने ही दी है। लोक और परलोक का विधान भी इसी वर्ग ने बनाया है।

हमारे देश की बहुसंख्यक जनता श्रम करने वाली है जो किसानी, मजदूरी, कारीगरी या अन्य जीविकोपार्जन के साधनों पर निर्भर है, यह अधिकतर ग्रामीण परिवेश में निवास करने वाली जनता है, इसमें साधारण लोग, विभिन्न जातियं, वर्गों के लोग है, दलित, अछूत एवं महिलाएं है जिनका सामाजिक संबंध, खानपान, रहन–सहन, आचार–व्यवहार और धार्मिक मान्यताएं शास्त्र सम्मत से भिन्न है और इसके समानान्तर चलने वाली है। आर्य–अनार्य के झगड़े और लोकशास्त्र की मान्यताओं के बीच हमेशा वर्ग संघर्ष होता रहा है। आर्यो द्वारा रचे गए वेदों उपनिषदों, पुराणों से साधारण जनता के आचार–व्यवहार, रीति, रिवाज, कर्म काण्डों का मेज जोल नहीं हो पाया, स्थिति यह हुई कि शास्त्र और लोक कभी मिलते कभी टकराते हुए चलते रहे, जहां अलगाव ज्यादा हुआ तो साधारण जनता को प्रभुत्वशाली वर्ग ने जाति धर्म, वर्ण से बाहर कर दिया। ऐसे लोगों तथा समुदायों के बीच धार्मिक, सामाजिक रीति–रिवाज और कानून कायदे, शास्त्र से एकदम अलग हो गए और लोक प्रचलित दूसरे आचार–व्यवहारों के साथ अपने ढंग से चलने लगे। शास्त्र और लोक के बीच द्वन्द्व की इस प्रक्रिया पर **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एवं आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी** ने भी विचार किया है, द्विवेदी जी ने कहा है कि लोक के दबाव में शास्त्र ने कभी–कभी अपने आपको लचीला बनाकर लोक की बहुत सी विशेषताओं को अन्तर्मुक्त कर लिया, भारत में उच्च्व वर्ग के इस वैचारिक लचीलेपन और समझौतावादी रूख का ही यह परिणाम हुआ कि हिंसात्मक विद्रोह की स्थितियां बहुत कम उत्पन्न हुई, इस दृष्टि से भारत की प्राचीन मनीषा अन्य अनेक देशों के बुद्धिजीवियों से अधिक चतुर और व्यवहार कुशल प्रतीत होती है, किन्तु यदि एक ओर शास्त्र ने झुककर लोक की विशेषताओं को अन्तर्मुक्त किया तो दूसरी ओर शास्त्र वंचित लोक भी अपने अनुभव–संचित विचार खण्डों को सुसंगत और समृद्ध बनाने के लिए शास्त्र का सहारा लेता

आत्रेमा

रहा है, इस दुहरी प्रक्रिया में कभी–कभी एक ऐसे लोक चेतना का निर्माण हुआ है जो व्यापक जन–विद्रोह के लिए वैचारिक आधार पर काम करता रहा है।''

भारतीय इतिहास के संदर्भ में द्विवेदी जी द्वारा प्रस्तुत यह लोक चेतना की अवधारणा निश्चय ही बहुत महत्वपूर्ण है।

Literature Review:

शोधार्थी ने विभिन्न अंतर्जतीय स्रोतों के माध्यम से पूर्व में हुए शोध कार्यों का अध्ययन एवं अवलोकन किया, जिसका विवरण निम्नलिखित है–

- संत कबीर के साहित्य का सांस्कृतिक मूल्यांकन, शोधकर्ता–अनुपमा सिंह, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, 2000
- कबीर की सामाजिक चेतना और आज का समय, शोधकर्ता–ज्योति यादव, 2024, अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली।

Description Broad Area:

कबीर के काव्य में व्यक्त सामाजिक व सांस्कृतिक चेतना जीवंत रूप में चित्रित हुए है जो वर्तमान के सापेक्ष है और जिसका भविष्य में भी महत्व रहेगा, शोधार्थी द्वारा कबीर के काव्य में व्यक्त लोकचेतना के विविध रूपों को रूपायित करके हिन्दी साहित्य की महत्ता और उपयोगिता को शोधात्मक दृष्टि से प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा।

Objectives of the Study:

संतमत के प्रवर्तक कवि कबीर दास जी के विचारों के माध्यम से आधुनिक जनमानस में लोक चेतना जागृत करना, उनमें उत्तेजना पैदा करना,

अन्तिमा

सामाजिक भेद–भाव एवं आर्थिक शोषण का विरोध कर अपने अधिकारों का हनन होने से बचाकर समाज में अपनी पहचान बनाना, अंधविश्वास को मिटाने का प्रयास करना, वाह्य आडम्बरों, कुरीतियों, जड़ता एवं अंधविश्वास का तर्क पूर्ण खण्डन करना, परम्परा रूढ़ि कुरीति तथाा पाखण्ड को यथार्थ के धरातल पर खारिज करना।

Research Methodology:

प्रस्तुत शोध कार्य में ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक वर्णनात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया जायेगा।

Expected outcome of the Research:

कबीर के काव्य में सामाजिक, सांस्कृतिक विकृतियों, पाखण्डों, अंधविश्वासों, छुआ–छूत, वाह्य आडम्बरों, टोना–टोटका, मूर्तिपूजा आदि को बड़ी ही ईमानदारी, तन्मयता और आत्मविश्वास के साथ यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है। यदि वर्तमान परिवेश का गहराई से मूल्यांकन किया जाए तो वही समस्यायें आज भी व्याप्त है, यदि कबीर की लोकचेतना वादी दृष्टिकोण से विश्लेषण किया जाए तो कबीर का समाज दर्शन, समाज और साहित्य जगत को नवीन दृष्टिकोण प्रदान करने में सर्वथा उपयुक्त होगा।

आत्तिमा

References:

1. भक्ति आंदोलन और भक्तिकाव्य–शिव कुमार मिश्र
2. दूसरी परम्परा की खोज–नामवर सिंह
3. चिंतामणि भाग–1–आचार्य राम चन्द्र शुक्ल, पृ0 80–81
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0सं0 42–आचार्य राम चन्द्र शुक्ल
5. भक्तमाल–1585ई–नाभादास
6. कबीर परचई–अनंत दास
7. भक्तमाल की रसबोधिनी टीका–प्रियादास
8. कबीर चरित–मुकुन्द दास
9. भक्तमाल, 1660 ई–राघवदास
10. गुरूग्रंथ साहिब–गुरू अर्जुन देव
11. कबीर मीमांसा–डॉ0 रामचन्द्र तिवारी, पृ0सं0 91
12. कबीर ग्रंथावली, 1961–पारस नाथ तिवारी
13. कबीर वचनावली–हरिऔध (अयोध्या सिंह उपाध्याय)
14. कबीर के पद (9 भागों में) 1910–क्षितिमोहन सेन
15. कबीर (1942)–आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
16. कबीर बाज भी, पपीहा भी, कपोत भी–डा0 धर्मवीर
17. कबीर के आलोचक–डा0 धर्मवीर
18. कबीर सूत न कपास–डा0 धर्मवीर
19. अकथ कहानी प्रेम की:कबीर की कविता और उनका समय–प्रो0 पुरुषोत्तम अग्रवाल
20. कबीर ग्रंथावली (1928 ई0) पृ0सं0 147–श्याम सुन्दर दास
21. कबीर साहित्य की परख, पृ0सं0 205–परशुराम चतुर्वेदी

आत्तिमा

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Antima Vishwakarma
Title	Kabeer ke kavya me lok chetna ka...
Paper/Submission ID	4091412
Submitted by	rjmauryauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-07-14 13:47:32
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **10%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

DrillBit

DrillBit Similarity Report

10	3	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	10	Publication
2	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
3	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication